**International Research Journal of Human Resource and Social Sciences**
**ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)**
**Impact Factor 7.924 Volume 12, Issue 05, May 2025**
**Website**- www.aarf.asia, **Email** : editoraarf@gmail.com
© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)

# बाई होल्कर की महिअहिल्याला सशक्तिकरण में भूमिका

**डॉ नेहा कुमारी जायसवाल**
**सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग**
**महिला महाविद्यालय, समस्तीपुर, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा**

## शोध सारांश

कभी - कभी एक साधारण परिवार के व्यक्ति को उसकी योग्यता के कारण नियति आश्चर्य जनक रूप से सब कुछ प्रदान कर देती है परंतु वही नियति जब छिनने पर आती है तो आपका सब कुछ इस तरह से छिन जाता है, जिस प्रकार मुट्ठी में रखी रेत कब हाथों से फिसल जाती है , कुछ पता ही नहीं चलता कुछ व्यक्ति उन परिस्थितियों की मार के थपेड़ों की चोट से अपने आप को संभाल नहीं पाते और तिनकों की भांति बिखर जाते हैं , परंतु कुछ ऐसे व्यक्तित्व भी होते हैं जो उन थपेड़ों की मार को अपने अंदर ही समेट कर उनकी परछाई तक भी अपने कर्तव्य पर नहीं आने देते । वह जानते हैं कि यदि वे अपने दुःखों को भूलकर अपने कर्तव्यों पर ध्यान नहीं देंगे तो उनके आस - पास के लोगों की विषम परिस्थितियों से निकल कर विकास के मार्ग पर चलने की यात्रा में ये लोग पीछे रह जाएंगे और तब निखर कर आता है एक अद्भुत व्यक्तित्व जो पूरी दुनिया को आश्चर्य के समुद्र में गोते लगाने के लिए विवश कर देता है।

इस प्रकार का असाधारण व्यक्तित्व इंदौर की महारानी अहिल्याबाई होलकर का था, जिन्हें इतिहास में लोकमाता तथा दार्शनिक रानी के नाम से जाना जाता है । लोकमाता तथा पुण्यश्लोक आदि उपाधियों से सुशोभित अहिल्याबाई होलकर (1725 ई - 1795 ई ) भारतीय इतिहास के सबसे महत्वपूर्ण राजवंशो में से एक राजवंश "मराठा साम्राज्य" की सबसे सम्मानित महिला शासक थी । इस समय भारत में महिलाओं की स्थिति अच्छी नहीं थी तथा विधवा स्त्रियों को बहुत सारी सामाजिक बाधाओं का सामना करना पड़ता था। उस विषम परिस्थिति में अहिल्याबाई होलकर ने महिलाओं के अधिकार के लिए लड़ाई लड़ी।

अहिल्याबाई ने अपने जीवन में अपने पति, ससुर और बेटे तीनों को खोने के बाद भी खुद को तिनकों की भांति बिखरने नही दिया और अपने आप को एक उत्कृष्ट महिला शासक, समाज सुधारक और महिला सशक्तिकरण के समर्थक के रूप में स्थापित किया । उनका अद्भुत नेतृत्व आज के समय की शासन व्यवस्था के लिए एक प्रेरणादाई स्त्रोत है । उनके द्वारा लिए गए नीतिगत निर्णय का महिलाओं के सामाजिक और आर्थिक विकास पर अत्यधिक प्रभाव दिखाई देता है। महिला सशक्तिकरण मे उनकी भूमिका का विस्तृत विवरण इस शोध पत्र में मैंने लिखने का प्रयास किया है।

आज के वर्तमान समय में महिला सशक्तिकरण के लिए विभिन्न आंदोलन चलाए जा रहे हैं,स्त्रीवाद की परिभाषा को लेकर आज की पीढ़ी में विभिन्न भ्रांतियां फैली हुई है , महिलाओं के सर्वांगीण विकास के लिए हमें किस तरह के दृष्टिकोण को अपनाना होगा, इन सभी का निवारण, स्त्रीवाद तथा महिला सशक्तिकरण की वास्तविक परिभाषा को सिद्ध करने वाली लोकमाता अहिल्याबाई होल्कर की जीवनी को जानने तथा उनकी नीतियों को समझने के बाद शोधपत्र के अध्ययन से आवश्यक रूप से परिलक्षित हो जाएंगी।

महिलाओं के सामाजिक सशक्तिकरण और आर्थिक विकास को समझने के लिए महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए उनके द्वारा किए गए कार्य आज के वर्तमान समय में हमारे लिए किस प्रकार एक मार्गदर्शक  का कार्य करते हैं तथा आज के आधुनिक समाज में अहिल्याबाई के योगदान का क्या प्रभाव है , इन सभी विषयों को समझने में यह शोध पत्र आज के वर्तमान समय में अत्यंत प्रासंगिक है । महिलाओं के सामाजिक सशक्तिकरण और आर्थिक विकास को समझने के लिए महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए उनके द्वारा किए गए कार्य आज के वर्तमान समय में हमारे लिए किस प्रकार एक मार्गदर्शक  का कार्य करते हैं तथा आज के आधुनिक समाज में अहिल्याबाई के योगदान का क्या प्रभाव है , इन सभी विषयों को समझने में यह शोध पत्र आज के वर्तमान समय में अत्यंत प्रासंगिक है ।

निष्कर्षतः आज के समय की मांग को लेकर यह शोध पत्र अत्यंत ही प्रासंगिक तथा महत्वपूर्ण है ।

**कुंजी शब्दः- सामाजिक, सशक्तिकरण, मार्गदर्शक, आर्थिक विकास,  सर्वांगीण**

## प्रस्तावना

आज के वर्तमान समय में एक ज्वलंत मुद्रा लैंगिक समानता तथा महिलाओं के सशक्तिकरण का है । इन ज्वलंत मुद्दों के सुधार की प्रक्रिया में कदम उठाने वाली मालवा की महारानी अहिल्याबाई होल्कर को यह शोध पत्र समर्पित है ।  एक ऐसी महिला जिन्होंने अपने दूरदर्शी दृष्टिकोण का प्रयोग कर स्त्रीवाद को सच्चे अर्थों में परिभाषित किया । आज के वर्तमान समय की पीढ़ी जो स्त्रीवाद  की परिभाषा को लेकर विभिन्न भ्रांतियां से घिरी है , उन्हें दूर करने में तथा जीवन में किसी परिस्थिति में अपने आप पर संयम रखकर समाज के लिए कुछ करने की लोकमाता की दृढ़ संकल्पना को आज की पीढ़ी के सामने रखने में वर्तमान समय में यह शोध पत्र अत्यंत ही प्रासंगिक तथा मील का पत्थर साबित होगी ।

## महिला सशक्तिकरण का ऐतिहासिक महत्व

आर्थिक , सामाजिक , राजनीतिक , शैक्षिक , लैंगिक  , अध्यात्मिक रूप से सशक्तिकरण ही सच्चे अर्थों में महिला सशक्तिकरण है । अर्थात शिक्षा , आर्थिक अवसर , स्वास्थ्य देखभाल तक पहुंच और कानूनी सहारा ,  सरकार में प्रतिनिधित्व और बदलते सामाजिक और सांस्कृतिक विचार सभी महिलाओं को सशक्त बनाने में सहायता कर सकते हैं ।  महिला सशक्तिकरण की बात आती है तो आमतौर पर यह लगता है कि महिला सशक्तिकरण तथा नारियों के उत्थान के लिए अन्य किए जाने वाली मांग जिसके लिए वैश्विक स्तर पर  आवाज उठाई जा रही हैं | वह विगत कुछ वर्षों से है परंतु यह विचार बिल्कुल निराधार है ।  उनकी व्यवस्था को सैद्धांतिक रूप तथा व्यवहारिक वैदिक काल से ही मिल चुका था ।  वैदिक साहित्य के कई  उद्धरण इस बात की पुष्टि करते हैं  । दुख की बात यह है कि स्त्री शिक्षा तथा उनके सम्मान की इतनी  गौरवपूर्ण एवं स्वर्णिम परिपाटी मध्यकाल के मुगल आक्रांताओ के शासनकाल और उसके बाद की फिरंगियों की गुलामी के दौरान छिन्न-भिन्न होती चली गई ।

मेरा मानना है कि चाहे वह वैदिक काल हो , मध्यकाल हो या फिर आधुनिक काल , महिलाओं की  स्थिति में गिरावट कभी नहीं आई बल्कि समाज की अपनी सोच , मानसिकता और इन्हीं  के द्वारा उत्पन्न की गई व्यवस्थाओं तथा परंपराओं में गिरावट आई , जिसके द्वारा महिलाओं की स्थिति प्रभावित चली गई ।

महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए समय-समय पर कई सुधारकों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान देकर महिलाओं की स्थिति को सुधारने की पूरी कोशिश की । ऐसी एक महान सुधारक हुई मालवा  की महारानी अहिल्याबाई होल्कर जिन्हें भारतीय इतिहास में लोकमाता के नाम से जाना जाता है ।

**जीवन परिचय**

हम सभी का जीवन कभी एक समान नहीं गुजरता हर किसी के जीवन में उतार-चढ़ाव आता है । कभी - कभी एक साधारण परिवार के व्यक्ति को उसकी योग्यता के कारण नियति आश्चर्य जनक रूप से सब कुछ प्रदान कर देती है परंतु वही नियति जब छिनने पर आती है तो आपका सब कुछ इस तरह से छिन जाता है, जिस प्रकार मुट्ठी में रखी रेत कब हाथों से फिसल जाती है , कुछ पता ही नहीं चलता कुछ व्यक्ति उन परिस्थितियों की मार के थपेड़ों की चोट से अपने आप को संभाल नहीं पाते और तिनकों की भांति बिखर जाते हैं , परंतु कुछ ऐसे व्यक्तित्व भी होते हैं जो उन थपेड़ों की मार को अपने अंदर ही समेट कर उनकी परछाई तक भी अपने कर्तव्य पर नहीं आने देते । वह जानते हैं कि यदि वे अपने दुःखों को भूलकर अपने कर्तव्यों पर ध्यान नहीं देंगे तो उनके आस - पास के लोगों की विषम परिस्थितियों से निकल कर विकास के मार्ग पर चलने की यात्रा में ये लोग पीछे रह जाएंगे और तब निखर कर आता है एक अद्भुत व्यक्तित्व जो पूरी दुनिया को आश्चर्य के समुद्र में गोते लगाने के लिए विवश कर देता है।

लेकिन मुश्किल समय में भी पूरी दृढ़ता के साथ परिवार और समाज के साथ खड़े रहना आसान नहीं होता , लेकिन जब हम देवी अहिल्याबाई जिन्हें जॉन के ने ' दार्शनिक महारानी ' की उपाधि भी दी है , के जीवन पर दृष्टि डालते हैं तो हमें जीवन में सभी प्रकार की परिस्थितियों से लड़ने की प्रेरणा मिलती है । वे हमारे जीवन प्रबंधन की एक ऐसी पाठशाला हैं , जहां ज्ञान , धैर्य , सहनशीलता जैसी बहुत सारी अच्छाइयों को अपने जीवन में उतारने की सीख मिलती है ।

इस प्रकार का असाधारण व्यक्तित्व इंदौर की महारानी अहिल्याबाई होलकर का था, जिन्हें इतिहास में लोकमाता तथा दार्शनिक रानी के नाम से जाना जाता है । लोकमाता तथा पुण्यश्लोक आदि उपाधियों से सुशोभित अहिल्याबाई होलकर (1725 ई - 1795 ई ) भारतीय इतिहास के सबसे महत्वपूर्ण राजवंशो में से एक राजवंश "मराठा साम्राज्य" की सबसे सम्मानित महिला शासक थी

भारतीय संस्कृति की स्त्री वाद की आदर्श , प्रेम , त्याग और उदारता की प्रतीक महारानी अहिल्याबाई होल्कर का जन्म 31 मई 1725 को महाराष्ट्र के चौन्डी नामक ग्राम में हुआ था । उनके पिता मंकोजी शिंदे एक सामान्य किसान एवं गांव के पाटिल थे । माता सुशीला बाई थी । अहिल्याबाई होल्कर इनकी इकलौती संतान थी । उस समय बालिकाओं को शिक्षा नहीं दी जाती थी । परंतु उनके पिता ने अहिल्याबाई को शिक्षा दिलवाई । स्वभाव से सीधी , सरल एवं ईश्वर पर विश्वास रखने वाली कन्या के गुणों को देखकर बचपन में ही मल्हारराव होलकर द्वारा उन्हें अपने बेटे लिए चुन लिया गया और उन्होंने अहिल्याबाई होल्कर को अपनी पुत्रवधू बना लिया । इतिहासकार ई. मार्सडेन के अनुसार " साधारण शिक्षित अहिल्याबाई 10 वर्ष के अल्पायु में में ही मालवा में होलकरवंशीय राज्य के संस्थापक मल्हारराव होलकर के पुत्र खंडेराव के साथ परिणय सूत्र में बंध गई थी । "

अहिल्याबाई ने अपने जीवन में अपने पति, ससुर और बेटे तीनों को खोने के बाद भी खुद को तिनकों की भांति बिखरने नही दिया और अपने आप को एक उत्कृष्ट महिला शासक, समाज सुधारक और महिला सशक्तिकरण के समर्थक के रूप में स्थापित किया । इस महान शासिका ने कालांतर में पुत्र मालेराव , दोहित्र नत्थू , दामाद फणसे पुत्री मुक्ता की मृत्यु होने पर पूरी तरह हताश होने के बाद भी स्वयं को संभालते हुए प्रजा हित में अपने कर्तव्य एवं दायित्व का निर्वाह बड़े कुशलता एवं निष्ठा के साथ करते हुए 13 अगस्त 1795 को इस संसार से विदा हो गई । उनका अद्भुत नेतृत्व आज के समय की शासन व्यवस्था के लिए एक प्रेरणादाई स्त्रोत है । उनके द्वारा लिए गए नीतिगत निर्णय का महिलाओं के सामाजिक और आर्थिक विकास पर अत्यधिक प्रभाव दिखाई देता है। महिला सशक्तिकरण मे उनकी भूमिका का विस्तृत विवरण इस शोध पत्र में मैंने लिखने का प्रयास किया है।

**अहिल्याबाई होल्कर प्रशासनिक और न्यायिक व्यवस्थापक के रूप में:**

अहिल्याबाई होलकर किसी बड़े राज्य की रानी नहीं थी , परंतु उन्होंने जो कुछ किया वह निश्चित ही आश्चर्यजनक था । वह वीर योद्धा एवं कुशल तीरंदाज थी । उन्होंने कई युद्ध में अपनी सेवा का नेतृत्व करते हुए हाथी पर सवार होकर युद्ध भी लड़े । अपने साम्राज्य को मुस्लिम आक्रमणकारियों से बचाने का प्रयास करती रही । अहिल्याबाई ने जब शासन को संभाला तब राज्य में बड़ी अशांति थी । जनता चोर - डाकुओं के आतंक से परेशान थी । ऐसे में उन्होंने सोचा कि राजा का पहला कर्तव्य अपनी प्रजा को शांति और सुरक्षा प्रदान करना होता है । शासन व्यवस्था के नाम पर हो रहे अत्याचारों से जो सामान्य जनता , किसान , मजदूर , अत्यंत दीन - हीन अवस्था में कष्ट भोग रहे थे । उनका एकमात्र सहारा धर्म , अंधविश्वास और रूढ़ियों कसा जा रहा था । न्याय में न शक्ति थी और ना ही विश्वास । ऐसे संकटकाल में अहिल्याबाई ने जो किया ,वह चीरस्मरणीय रहेगा । राज्य को विस्तार देने के लिए उन्होंने राज्य को तहसीलों और जिलों में बांट दिया | प्रजा और शासन की सुविधा का ध्यान रखते हुए तहसीलों और जिलों में केंद्र बनाएं । आवश्यकता के अनुसार न्यायालयों की स्थापना की । राज्य की सारी पंचायत को व्यवस्थित किया एवं न्याय पाने की सीढ़ियां बना दी ।

आखिर अपील मंत्री सुनते थे । परंतु उनके फैसले से किसी को संतोष नहीं होता तो महारानी स्वयं अपील सुनती थी । अहिल्याबाई की न्याय प्रियता का एक प्रमुख उदाहरण तब सामने आता है , जब उन्होंने न्याय करते समय अपने ही पुत्र को दोषी पाए जाने पर रथ से कुचलने का मृत्यु दंड दे दिया ,और जब कोई व्यक्ति रथ चलाने के लिए तैयार नहीं हुआ तो वे स्वयं इस कार्य के लिए रथ लेकर चल पड़ी । यह घटना उनकी निष्पक्ष न्याय व्यवस्था का ज्वलंत उदाहरण है ।

रानी का जीवन वैराग्य , कर्तव्य पालन और परमार्थ का था ।वे श्री भगवान शंकर की उपासक थी । अतः उन्होंने अपना सारा राज्य शिव को समर्पित कर दिया था । स्वयं वे अपने आप को उनकी सेविका बता कर शासन करती थी और कहा करती थी कि " **संपत्ति सब रघुपति के आदि " " अर्थात सारी संपत्ति भगवान की है ।** " इसलिए वह राजाज्ञा पर हस्ताक्षर करते समय केवल शंकर लिखती थी । उनके रूपयों पर शिवलिंग और बिल्व पत्र चित्र अंकित है और पैसों पर नन्दी का चित्र बना है । तब से लेकर भारतीय स्वराज की प्राप्ति तक वहां के सिंहासन पर जो भी शासक हुए उन सभी के शासनकाल में राजाज्ञा श्री शंकर की आज्ञा के बिना अमल नहीं होती थी ।

अहिल्याबाई होल्कर का महिला सशक्तिकरण में योगदान अहिल्याबाई होल्कर नारी सशक्तिकरण के पक्षधर थी । उन्होंने नारी शक्ति का भरपूर उपयोग किया । अपने शासनकाल में उन्होंने नदियों में जो घाट , स्नान आदि के लिए बनवाए थे । उनमें महिलाओं के लिए अलग व्यवस्था हुआ करती थी । उनके मान-सम्मान पर विशेष ध्यान दिया जाता था । लड़कियों को पढ़ाने - लिखाने का जो घरों में थोड़ा बहुत चलन था , उसे उन्होंने विस्तार प्रदान किया ।

**विधवा पुनर्विवाह के पक्ष में**

अहिल्याबाई होल्कर स्वयं एक विधवा थी , उन्होंने उस समय समाज में विधवाओं के लिए जो कष्टमय जीवन था , उसे देखकर उन्होंने विधवाओं के लिए पुनर्विवाह के लिए कोशिश की । उनका मानना था कि महिलाओं को भी अपना नया जीवन शुरुआत करने के लिए एक और मौका देना चाहिए । उनके राज्य में विधवाओं के लिए पुनर्विवाह से संबंधित कानून भी बनाए गए । जो विधवा औरतों को आर्थिक और सामाजिक प्राश्रय देते थे ।

**<u>महिलाओं के लिए शिक्षा की व्यवस्था</u>**

अहिल्याबाई ने महिलाओं के लिए शैक्षिक सुविधा उपलब्ध करायी । उनकी विरासत का सबसे महत्वपूर्ण पहलू महिलाओं के लिए शिक्षा के क्षेत्र में उनका अग्रणी कार्य है । यह अच्छी तरह से जानते हुए कि शिक्षा महिला सशक्तिकरण के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है । उन्होंने अपने राज्य में कई स्कूल और शिक्षण संस्थान स्थापित

किये। उन्होंने महिला शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए सामाजिक मानदंडो को तोड़ा, यह समझते हुए कि समाज के प्रगति के लिए महिला सशक्तिकरण आवश्यक है । उनका यह विश्वास कि , **' मेरे नाना के लिए , एक लड़की की शिक्षा गरीबी से बाहर निकलने का टिकट थी** ' लैंगिक समानता के विषय में आधुनिक चर्चाओं में गूंजती रहती है । आज कई संगठन तथा आंदोलन लड़कियों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करते हैं , जो अहिल्याबाई के दृष्टिकोण को प्रतिध्वनित करते हैं ।शैक्षिक सुधारो की नींव रखकर उन्होंने न केवल अनगिनत महिलाओं के जीवन को बदल दिया बल्कि अपने राज्य के समग्र उन्नति में भी योगदान दिया ।

**महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण में योगदान**

अहिल्याबाई होल्कर ने महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण के लिए बहुत सारी योजनाएं बनायी । कृषि , औद्योगिककरण तथा हस्तकरघा के द्वारा महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाने के लिए बहुत सारे प्रयास किये । उन्होंने कम ब्याज पर किसानों को कर्ज प्रदान किया , जो औरतों के लिए भी फायदेमंद हुआ । उन्होंने महिलाओं को अपना छोटा व्यापार शुरू करने के लिए प्रोत्साहित किया । जिससे वह आर्थिक रूप से धीरे-धीरे स्वतंत्रता को प्राप्त कर सकती हैं । महिलाओं को अपनी अलग संपत्ति रखने का भी अधिकार दिया और उन्हें कृषि कार्यों में भी काम करने की स्वतंत्रता दी। उन्होंने महिलाओं को कृषि में भाग लेकर आर्थिक रूप से अपने परिवार के अर्थोपार्जन में एक मुख्य भूमिका निभाने का मौका दिया । आज से लगभग 300 साल पहले अहिल्याबाई होल्कर द्वारा महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण के लिए जो दूरदर्शी सोच और काम का तरीका अपनाया गया , वह आज के समय में भी प्रासंगिक है ।

**सामाजिक एवं धार्मिक सशक्तिकरण में योगदान**

अहिल्याबाई होलकर ने धर्मनिरपेक्षता को प्रमुखता दिया था , तथा वे सांप्रदायिकता के खिलाफ थी । उन्होंने सामाजिक तथा धार्मिक कार्यों में औरतों को पुरुषों के बराबर भागीदारी लेने के लिए प्रेरित किया । उन्होंने सरकार में ऊंचे पदों पर महिलाओं की नियुक्ति को भी उचित ठहराया था , जिसके कारण महिलाओं को अपना अधिकार प्राप्त करने में आसानी हो । उन्होंने यह भी कहा कि महिलाओं को धार्मिक अनुष्ठानों में या किसी तरह के मंत्रोच्चारण में पुरुषों के समान भागीदारी लेने का अधिकार है । उनका मानना था कि महिलाओं की धार्मिक तथा सामाजिक प्रत्येक स्थिति में महिलाओं की सुनिश्चित भागीदारी हमारी सभ्यता तथा संस्कृति के संरक्षण तथा विकास के लिए आवश्यक है ।

**निष्कर्षतः**

अहिल्याबाई होल्कर का चरित्र और शासन कल्याण , शिक्षा और अच्छे सार्वजनिक बुनियादी ढांचे को प्रदान करने पर केंद्रीय नेतृत्व की शैली का उदाहरण है । सामाजिक कल्याण और समावेशिता के सिद्धांतों पर आधारित अहिल्याबाई की दूरदर्शी नीतियों ने संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्षण को भी पूर्वाभास दिया । उनका जीवन चरित्र हमें यह सीख देता है कि सच्चा नेतृत्व केवल सत्ता पर विराजमान होने के विषय में नहीं है , बल्कि सबसे कमजोर लोगों की रक्षा और उत्थान से संबंधित है ।

अहिल्याबाई होल्कर के जीवन और शासनकाल पर विचार करने पर हम पाते हैं कि उनका शासन मॉडल समकालीन समाज के लिए अमूल्य सबक प्रदान करता है । अहिल्याबाई की विरासत , सामाजिक न्याय और समानता को बढ़ावा देने में दूरदर्शी नेतृत्व के प्रभाव का प्रमाण है । शिक्षा को बढ़ावा देने एवं आर्थिक अवसरों को बढ़ावा देने के लिए उनकी प्रतिबद्धता आज की प्राथमिकताओं के साथ प्रतिध्वनित होती है : सतत् विकास और असमानता में कमी । अपने सामाजिक और आर्थिक सुधारो के अलावा ,अहिल्याबाई होल्कर ने वास्तुकला के एक महत्वपूर्ण संरक्षक के रूप में काम किया । उन्होंने कई मंदिर, किले और सार्वजनिक स्मारक बनवाए , जो उनकी कलात्मक रुचि को दर्शाता है । अहिल्याबाई ने संगीत

और नृत्य सहित कई कलाओं को संरक्षण दिया । एक जीवंत सांस्कृतिक वातावरण को बढ़ावा दिया और अपने साम्राज्य में धार्मिक और स्थापत्य के विरासत की व्यापक बहाली का समर्थन किया ।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने इंदौर में देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के हीरक जयंती समारोह के अवसर पर देश से यह आवाहन किया " बेटियों को शिक्षित तथा आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रोत्साहित किया जाए । देश को विकसित बनाने में बेटियों का अहम योगदान रहेगा । बेटियों को शिक्षित तथा आत्मनिर्भर बनाने तथा देश के सर्वांगीण विकास के लिए सामूहिक प्रयासों की जरूरत है । उन्होंने कहा कि अहिल्याबाई होल्कर महिला सशक्तिकरण और आत्मनिर्भरता का उत्तम उदाहरण है । देवी अहिल्याबाई होल्कर ने कुशल प्रशासन , न्याय परायणता और कल्याणकारी कार्यों में कई मानक स्थापित किए हैं । लोकमाता अहिल्याबाई के पिताजी ने उन्हें उस दौर में शिक्षा दिलाई जब बालिकाओं को शिक्षा दिलाने में विरोध होता था । "

अहिल्याबाई होल्कर द्वारा महिला सशक्तिकरण की दिशा में किए गए कार्य भारत के इतिहास में एक अलग ही छाप छोड़ते हैं । उन्होंने महिलाओं के आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए अपने शासनकाल में जो कदम उठाए थे , आज भी वे संगठनो तथा आंदोलनों के लिए प्रासंगिक है । धार्मिक कार्यों में भागीदारी , सामाजिक समानता , आर्थिक स्वतंत्रता और शिक्षा के अवसर प्रदान करने के लिए उन्होंने बहुत सारी नीतियां बनाई थी । अहिल्याबाई के योगदान को देखते हुए उनको एक सच्चा आदर्श माना जा सकता है , जो आज के समय में प्रत्येक व्यक्ति के लिए अनुकरणीय है। अहिल्या बाई द्वारा महिला सशक्तिकरण के लिए जो मार्ग दिखाए गए हैं , वो हमारे लिए एक मार्गदर्शक का कार्य करती है ।

भारत का इतिहास महिलाओं के अद्भुत उदाहरणों से भरा पड़ा है जिन्होंने अपने साहस, करिश्मा, दूरदर्शिता और सबसे महत्वपूर्ण रूप से चरित्र की ताकत के माध्यम से देश का नेतृत्व किया, लेकिन मालवा की दयालु और बहादुर रानी अहिल्याबाई होल्कर हमेशा सबों के बीच खड़ी रहेंगी।

महिलाओं के सामाजिक सशक्तिकरण और आर्थिक विकास को समझने के लिए महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए उनके द्वारा किए गए कार्य आज के वर्तमान समय में हमारे लिए किस प्रकार एक मार्गदर्शक का कार्य करते हैं तथा आज के आधुनिक समाज में अहिल्याबाई के योगदान का क्या प्रभाव है , इन सभी विषयों को समझने में यह शोध पत्र आज के वर्तमान समय में अत्यंत प्रासंगिक है ।

निष्कर्षतः आज के समय की मांग को लेकर यह शोध पत्र अत्यंत ही प्रासंगिक तथा महत्वपूर्ण है ।

## संदर्भ


1. पाटिल, एम.एस. सोशल पॉलिसी ऑफ द मराठा इम्पायर , पॉपुलर पब्लिकेशन , 1990

2. काले , गोविंद , अहिल्याबाई होल्कर : सामाजिक सुधारक ,मराठा इतिहास कान्फ्रेंस, 2007

3. जोशी, सुषमा , अहिल्याबाई होल्कर और महिला सशक्तिकरण, सेंटर फॉर वीमेंस स्टडीज , पूना विश्वविद्यालय , 2005

4. डॉ. शिवचरण लक्ष्मण कोटवार , महिलाओं के आर्थिक तथा सामाजिक विकास में अहिल्याबाई होल्कर का योगदान ,IJFMR, E - ISSN : 2582 - 2160

5. श्रीमती रेखा पाण्डेय , नारी शक्ति की सशक्त प्रतीक अहिल्याबाई होल्कर , MAY 31 , 2004